शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-4, Issue-2
15 July, 2013

अज्ञेय के सम्पूर्ण कृत्तित्व का विवेचन, विश्लेषण

डॉ० राकेश शुक्ल
एसोसिएट प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग,
वी०एस०एस०डी०कालेज,
कानपुर

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

शोध परियोजना प्रतिवेदन प्रकाशन

अज्ञेय के सम्पूर्ण कृत्तित्व का विवेचन, विश्लेषण

- डॉ० राकेश शुक्ल

वृहत शोध परियोजना
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग नई दिल्ली
सत्र - 2011-12
शोध परियोजना प्रतिवेदन प्रकाशन
शीर्षक - अज्ञेय साहित्य विमर्श (चार खण्ड)
लेखक - डॉ० सुरेश चन्द्र पाण्डेय
प्रकाशन - नमन प्रकाशन 4231/1 अंसारी रोड दरियागंज, नई दिल्ली - 110002
संस्करण - 2010
पृष्ठ सं०- (समस्त खण्ड 1319)
मूल्य - रू० 2650/-

विषय संकेतः- अज्ञेय, समालोचना, हिन्दी कविता, साहित्य विमर्श

अज्ञेय जन्म शताब्दी वर्ष में डॉ0 सुरेश चन्द्र पाण्डेय की पुस्तक ''अज्ञेय साहित्य-विमर्श'' का प्रकाशन, अज्ञेय साहित्य के ईमानदार, जागरूक और संवेदनशील अध्येता की सच्ची श्रद्धा जलि है। अज्ञेय के घनिष्ठ सम्पक्र में रह चुके कुछ विद्वानों की अज्ञेय साहित्य के पक्ष विशेष पर समीक्षा कृतियाँ उपलब्ध जरूर ह।, पत्र-पत्रिकाओं में रचनाकार अज्ञेय के व्यक्तित्व और साहित्य की विशेषताएँ उद्घाटित करने वाले लेखों की भी कमी नही है, इसके बावजूद समीक्ष्य ग्रन्थ इसलिए महत्त्वपूर्ण है कि लेखक ने अज्ञेय के सम्पूर्ण रचनात्मक साहित्य को उसकी समग्रता में देखने-दिखाने का प्रयास किया है, अज्ञेय की रचनाओं में उसने नैरन्तर्य, विकास के सोपानों तथा अन्तरवर्ती सूत्रों को परखने की भी कोशिश की है। इस क्रम में लेखक ने अज्ञेय की मौलिक और सम्पादित कुल 63 कृतियों का विवेचन-विश्लेषण किया है। इसके अतिरिक्त 'प्रिजन डेज़ एण्ड अदर पोयम्स' तथा 'नीलाम्बरी' से सम्बन्धित जानकारी भी लेखक ने परिशिष्ट में उपलब्ध करा दी है। विवेच्य कृति चार खण्डों में प्रकाशित है। जिसमें कुल 1319 (प्रथम खण्ड-298 पृष्ठ, द्वितीय खण्ड-286 पृष्ठ, तृतीय खण्ड-355 पृष्ठ और चतुर्थ खण्ड-400 पृष्ठ) पृष्ठ है। इतने बृहद, कलेवर वाली इस कृति को लेखक ने कुल पाँच अध्यायों में विभक्त किया है। प्रथम अध्याय का शीर्षक है- 'जीवन-रेखा : व्यक्तित्व' (प्रथम खण्ड), दूसरे अध्याय का नाम है- 'अज्ञेय : साहित्य-विवेचन' (प्रथम खण्ड से लेकर चतुर्थ खण्ड तक प्रसरित), तीसरा अध्याय है- 'रचनाओं में अन्तरवर्ती सूत्र' (चतुर्थ खण्ड), चौथा अध्याय है- 'समालोचना के घेरे में, (चतुर्थ खण्ड) तथा पाँचवे अध्याय का शीर्षक है- 'विचार-दर्शन' (चतुर्थ खण्ड)। इसके अतिरिक्त परिशिष्ट एवं आधार ग्रन्थ सूची भी चतुर्थ खण्ड में प्रस्तुत है। अन्ततः निष्कर्ष स्वरूप शब्दातीत कुछ अर्थ का भी संकेत किया गया है।

इस ग्रन्थ के पहले अध्याय में अज्ञेय की जीवन रेखा प्रस्तुत की गयी है तथा उनके व्यक्तित्व के विविध पक्षों का विश्लेषण किया गया है। अज्ञेय जैसे रचनाकार के व्यक्तित्व की जटिलता को स्वीकार करते हुए लेखक ने जो सामग्री जुटाई है उसे दो शीर्षकों के अन्तर्गत प्रस्तुत किया है- 'अज्ञेय अपनी कृतियों में तथा 'अज्ञेय दूसरों की निगाह में। दूसरे अध्याय में अज्ञेय साहित्य का समग्र विवेचन कुल सात खण्डों में किया गया है- (1) काव्य (2) व्यक्तित्व व्यंजक निबंध (3) कथा साहित्य (4) समीक्षात्मक सर्जना (5) अन्तः प्रक्रियाए (डायरिया) (6) यात्रावृत्त और (7) सम्पादित कृतियाँ। इसमें काव्य विवेचन प्रकरण काफी विस्तृत है। इसमें ही 'उत्तर प्रियदर्शी' जो वस्तुतः गीतिनाट्य है, को स्थान दिया गया है। लेखक ने 'शरणार्थी श्रृंखला' की कविताओं का भी विवेचन विश्लेषण किया है। यहा इतना जोड़ दिया जाय कि 'शरणार्थी' संग्रह में कविताओं के साथ कुछ कहानियाँ भी प्रकाशित हुई थी आलोचकों का ध्यान कहानियों की ओर तो गया

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-4, Issue-2
15 July, 2013

अज्ञेय के सम्पूर्ण कृत्तित्व का विवेचन, विश्लेषण

डॉ० राकेश शुक्ल
एसोसिएट प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग,
वी०एस०एस०डी०कालेज,
कानपुर

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

लेकिन शरणार्थी श्रृंखला की कविताए आलोचकों की निगाह से अछूती रह गयीं। काव्य विवेचन के इस प्रकरण में लेखक ने अज्ञेय की प्राय: सभी कविताओं का वर्गीकरण विश्लेषण प्रस्तुत करते हुए अभिव्यक्ति-कौशल और भाषिक संरचना पर टिप्पणी की है तथा उनकी भाव-संवेदना और अभिव्यक्ति-विधान का विकासात्मक आकलन किया है, प्रत्येक संदर्भ का वर्गीकरण सहित बिम्बों, तद्भव और बोली के शब्दों, प्रतीकों और उनके निहितार्थ तथा संस्कृति व्यंजक अभिव्यक्तियों की सूची भी प्रस्तुत की है। इतना ही नही प्रत्येक संग्रह में आये हुए पशु-पक्षियों, वृक्षों और फूलों की सूची भी प्रस्तुत है। काव्य-विवेचन में विस्तार का यह प्रमुख कारण है। लेखक ने इतने विस्तार में जाने की जरूरत शायद इसलिए समझी हो कि अज्ञेय को कभी-कभी 'चालानी माल' तथा 'विदेशी विचारों का आयात करने वाला रचनाकार' कहा गया लेखक ने पुष्ट प्रमाणों के द्वारा यह सिद्ध करने की पुरजोर कोशिश की है कि अज्ञेय की भाव संवेदना अपने देश की संस्कृति, परम्परा और माटी में रची-बसी है क्योंकि अज्ञेय ने स्पष्ट रूप से अपने देश की पुराणगाथाओं तथा मिथकों में आस्था व्यक्त की थी और कहा था कि किसी देश के गहनतम रहस्यों तक पहुँचने की पहली सांस्कृतिक इकाई पुराणगाथाएँ होती है। और यह भी कि, 'रचना की भाषा संस्कृति की आँख है। हमें वह आ ख खुली रखनी है इसके लिए उसे प्रतिदिन बहते स्वच्छ जल से धोते रहने की उपयोगिता है।' इस प्रकार लेखक ने अज्ञेय पर आलोचकों द्वारा लगाये गये आक्षेपों का विश्वसनीय और तक्रसम्मत उत्तर दिया है।

दूसरे अध्याय के 'व्यक्तिव्यंजक निबंध' संज्ञक दूसरे खण्ड में 'सब रंग और कुछ राग', लिखि कागद कोरे', 'कहा है द्वारका' निबंध संग्रहों का विस्तृत विवेचन किया गया है। अज्ञेय को उद्धृत करते हुए लेखक ने व्यक्तिव्यंजक निबंधों की विशेषताओं का उद्घाटन किया है तथा अज्ञेय की गद्य-शैली एवं उनके विशिष्ट भाषिक प्रयोगों पर भी प्रकाश डाला है। 'कथा साहित्य' शीर्षक तीसरे खण्ड में 'शेखर: एक जीवनी भाग-1 एवं 2', 'नदी के द्वीप', 'अपने-अपने अजनबी' तथा अज्ञेय के दो असमाप्त उपन्यासों- 'बीनू भगत' और 'छाया मेखल' के साथ-साथ उनकी सम्पूर्ण कहानियों का विषद विवेचन लेखक ने किया है। 'समीक्षात्मक सर्जना' नामक चौथे खण्ड के अन्तर्गत लेखक ने उपखण्ड 'क' में कुल 15 कृतियों का बहुत ही सटीक विवेचन किया है। उपखयड-ख में 'आत्मपरक', केन्द्र और परिधि', 'कवि दृष्टि' तथा 'कवि निकष', का भी उल्लेख कर दिया है और इन ग्रंथों से सम्बन्धित बहुत ही मूल्यवान सूचना उपलब्ध करायी है। 'आत्मपरक'- 'आत्मनेपद' और 'लिखि कागद कोरे' का पुनर्मुद्रित संस्करण है। 'केन्द्र और परिधि' के निबंध 'अद्यतन' स्रोत और सेतु', 'युग सन्धियों पर', 'धार और किनारे', 'जोग लिखी' तथा 'आलवाल' से लिए गये है। 'कवि दृष्टि' अज्ञेय द्वारा सम्पादित ग्रन्थों की भूमिकाओं का संकलन है। इसमें 'पुष्करिणी', 'रूपाम्बरा' तथा चारों सप्तकों की भूमिकाए संकलत है। इस पुस्तक का आमुख डॉ0 राम स्वरूप चतुर्वेदी द्वारा लिख गया है। 'कवि निष्कर्ष' अज्ञेय के गद्य साहित्य से चुने गये श्रेष्ठ लेखों, डयरियों की टीपों का संकलन है, इसे अज्ञेय ने स्वयं तैयार किया है। इसमें पं0 विद्या निवास मिश्र और इला डालमिया की भूमिकाएँ महत्त्वपूर्ण है। इस प्रकरण में उल्लिखित और विवेचित 15 कृतियों के माध्यम से अज्ञेय के समीक्षात्मक मानदण्डों का निरूपण किया गया है साथ ही हिन्दी समीक्षा को अज्ञेय के योगदान का संक्षिप्त किन्तु सारगर्भित मूल्याँकन लेखक ने किया है। 'अन्त: प्रक्रियाए ' नामक पा चवे खण्ड में अज्ञेय की चार डायरियों- 'भवन्ती', 'अन्तरा', 'शाश्वती' और 'शेष' का व्यवस्थित एवं सटीक विवेचन किया गया है। वस्तुत: इन डायरियों में ही अज्ञेय साहित्य को समझने के महत्त्वपूर्ण सूत्र विद्यमान है। जिनका सहारा लेकर लेखक ने अज्ञेय साहित्य का सम्यक् आलोड़न किया है। इन डायरियों को पढ़े बिना अज्ञेय साहित्य की, विशेष रूप से काव्य की समझ बन नही सकती। डायरियों की टीपों का लेखक ने उनकी विषय वस्तु को ध्यान में रखते हुए वर्गीकरण किया है। प्रत्येक डायरी की कुल टीपों का एक चार्ट बनाकर उल्लेख किया है। इस ग्रन्थ के तीसरे अध्याय में भी इन डायरियों के महत्त्व पर विशद प्रकाश डाला गया है। 'यात्रावृत्त' नामक छठे खण्ड में 'अरे यायावर रहेगा याद' और 'एक बूँद सहसा उछली' अज्ञेय के दोनों यात्रा वृत्तान्तों की विवेचना हई है। पहली कृति का सम्बन्ध भारत भ्रमण से है और दूसरी का सम्बन्ध यूरोप भ्रमण से है।

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-4, Issue-2
15 July, 2013

अज्ञेय के सम्पूर्ण कृत्तित्व का विवेचन, विश्लेषण

डॉ० राकेश शुक्ल
एसोसिएट प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग,
वी०एस०एस०डी०कालेज,
कानपुर

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

लेखक के अनुसार भारत भ्रमण और विशेषतया हिमायल अज्ञेय को शिव-पार्वती के मिथक के जोड़ता है उनमें नयी दृष्टि के उन्मेश का कारण बनता है तो दूसरी ओर फ्राँस के 'पिएर-क्वि-वीर' मठ में उन्हें 'समय की शिला' के प्रतीकार्थ का बोध होता है और 'मौन नदी के किनारे खड़ा होकर' वे 'वन के सन्नाटे' का छन्द सुनते है। इसी अर्थ में अज्ञेय का कथन- 'मैं सेतु हूँ' सार्थकता प्राप्त करता है।' सम्पादित कृतियाँ' शीर्षक इस अध्याय के सातवें और अन्तिम खण्ड में अज्ञेय द्वारा सम्पादित कुल 16 कृतियों की अज्ञेय लिखित भूमिकाओं का विवेचन हुआ है और इस विवेचन में अज्ञेय की समीक्षात्मक सर्जना पर अतिरिक्त रूप से प्रकाश पड़ता है।

तीसरे अध्याय में अज्ञेय की रचनाओं में अन्तरवर्ती सूत्रों को पहचानने की कोशिश में लेखक ने रचनाओं से समानान्तर उद्धाहरण दिये है। और यह स्थापित करने का प्रयास किया है कि अज्ञेय की रचनाओं को समझने के लिए जरूरी सूत्र खुद उनकी रचनाओं में ही मौजूद है। यह उदाहरण पर्याप्त होगा- 'काल का डमरू नाद' (आलवाल), 'संवत्सर' और 'स्मृति के परिदृश्य' अज्ञय के काल चिंतन से सम्बन्धित है। 'शाश्वती' की एक छोटी सी टीप में और 'भवन्ती' में अज्ञेय का काल से सम्बन्धित सूत्र रूप में उपलब्ध है- ''स्मरामि अतएव अस्मि! मैं स्मरण करता हूँ इसलिए मैं हूँ । इसकी व्याख्या अज्ञेय ने उसी टीप में इन शब्दों में की है- 'स्मृति के सहारे हो हम दिक् को काल और काल को दिक् में परिणत करते है। स्मृति के सहारे ही हम दिक्काल को एक वास्तविक सातत्य (या सतत् सत्ता) देते है। (शाश्वती)। भवन्ती की निम्नलिखित टीप भी काल-चिन्तन से सम्बन्धित है- ''जो वर्तमान है, घटमान है, वह निरन्तर हमें बदलता है क्योंकि हम उसमें है। और जो भूत है और जो भविष्यत् है, उसे बदलते है।, क्योंकि वे हममे है। वर्तमान में जी सकना, संकल्प पूर्वक, समाधिपूर्वक अपने काल पर घटमान हो सकना और होते रहना''

चौथे अध्याय में अज्ञेय कृत्तिव की समकालीन आलोचना का परिप्रेक्ष्य और अज्ञेय की प्रतिक्रिया को प्रमाण पुष्ट उद्धरणों/उदाहरणों के द्वारा उजागर किया गया है। लेखक ने अज्ञेय का यह मत उद्धत किया है- 'मेरी पीढ़ी को वह आलोचना नही मिली।' और इस आशय के परिप्रेक्ष्य में अज्ञेय के मूलभूत समीक्षा सिद्धान्तों तथा आलोचकों द्वारा उनकी कृतियों की पक्षपातपूर्ण आलोचना का भी जिक्र किया है। ध्यातव्य है कि अज्ञेय के समीक्षा सिद्धान्तों की व्यापक विवेचना दूसरे अध्याय के 'समीक्षात्मक सर्जना' संज्ञक चौथे खण्ड में हुई है। पाँचवे अध्याय में अज्ञेय के विचार दर्शन को सूत्रवत प्रस्तुत किया गया है। अज्ञेय के विचार दर्शन की ओर इससे पहले शायद किसी का ध्यान नही गया था अज्ञेय की रचनाओं से लेखक ने जीवन-जगत् ओर रचना-कर्म से सम्बन्धित उनके दृष्टिकोण को सूत्रवत् श्रृंखलित करते हुए विवेचित किया है। अज्ञेय के विचार दर्शन में कुछ सूत्र बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। जिनकी ओर लेखक ने संकेत किया है- 'स्मरामि अतएव अस्मि।' x x x x 'श्रद्धा की उपलब्धियों का सैकड़ों हजारों वर्ष का संस्कार मुझमे जीता है लेकिन मैं आज के विज्ञान में जीता हूँ। मेरा संदर्भ आधुनिक विज्ञान का जगत है। सनातन श्रद्धा का संदर्भ मैं- यह आज का तनाव जीवी मैं।' x x x x 'भारत का हृदय देश-कौस्तुभ मणि स श्रीवत्स चिह्न सरीखे, मध्य प्रदेश के घने जंगल, वनमाला की लड़ियों सी नर्मदा/बेतवा-नमोनारायण, नमोभारताय च नारायणाय च।' x x x x 'लीला/ कल्प/ तीर्थ/ सम्पराय/ संवत्सर।' (इन सबके लिए पश्चिम की सभ्यता में कोई शब्द नही है। अज्ञेय के अस्मिताबोध की यही कुंजी है।)

विवेच्य ग्रन्थ का अपना महत्त्व है। इस ग्रंथ में विवेचन की योजना लेखक की अपनी दृष्टि का परिणाम है और लेखक ने जो कुछ भी कहा है उसमें अज्ञेय की भाव-सेवेदना के निकट तक पहुँचने का सार्थक सफल प्रयास स्पष्टत: दिखायी पड़ता है। उसने अज्ञेय साहित्य के भीतर अपनी आ ख से झा कने का प्रयास किया है जिसका पुष्ट प्रमाण पुस्तक के इन खण्डों में जोड़े गये परिशिष्टों में मिलता है। इन परिशिष्टों में प्रो0 विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, स्व पं0 विद्या निवास मिश्र, स्व0 डॉ0 रामकमल राय, डॉ0 रमेश चन्द्र शाह, डॉ0 नन्द किशोर आचार्य तथा राष्ट्रकवि स्व0 मैशिलीशरण के सुपुत्र श्री उर्मिलाचरण जी गुप्त तथा डॉ0 पूनमचन्द्र तिवारी के महत्त्वपूर्ण साक्षात्कार अविकल रूप में प्रस्तुत है। जिनमें अज्ञेय के व्यक्तित्व और साहित्य के अनछुए पहलुओं पर प्रकाश पड़ा है। इनमें कुछ दुर्लभ चित्र है। यथा हवा महल का चित्र, अज्ञेय की

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-4, Issue-2
15 July, 2013

अज्ञेय के सम्पूर्ण कृत्तित्व का विवेचन, विश्लेषण

डॉ० राकेश शुक्ल
एसोसिएट प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग,
वी०एस०एस०डी०कालेज,
कानपुर

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

जन्मस्थली (कुशी नगर, देवरिया) का चित्र, थार के मरु का चित्र आदि। ध्यातव्य है कि अज्ञेय की भाव-संवेदना के पहुँचने के प्रक्रम में लेखक ने बीकानेर नागौर और थार के मरुस्थल की यात्राएं भी की। विशिष्ट लेखों में अज्ञेय को साहित्य का प्रसिद्ध अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार 'स्वर्ण माल (मिलने पर सन् 1983 में 'दिनमान' प्रकाशित विशेष रपट, मराठी के श्रेष्ठ कवि वृन्दा करन्दीकर के लेख, जून 1987 के 'दिनमान' में प्रकाशित बी0बी0सी0 के प्रतिनिधि से अज्ञेय की बातचीत अत्यंत महत्त्वपूर्ण दस्तावेज है। यह ग्रन्थ लेखक की उत्कृष्ट शोधवृत्ति और सुदीर्घ चिन्तन मनन का सुफल है। 'शब्दातीत कुछ अर्थ' वस्तुतः लेखक का निष्कर्ष है- ''अज्ञेय के अन्तस में बैठा कवि घोषित करता है- 'मेरे क्षितिजों पर गुजरता काफिला रुकने को है, लेकिन वह निश्चयपूर्वक यह भी जानता है और उसका इसमें विश्वास है 'एक मैं नही हूँ- अस्ति दूसरी इससे बड़ी नहो है कोई', और आवर्ती काल में उसका विश्वास जो था वह कवि 'पराजय से गिरा', 'पीड़ा से उसके लोचन भर आये, लेकिन उसने मुह नही खोला', 'अपने को, अपने साथ सबको, अपनी सर्वमयता को निबाहा' और 'अपना दान कर दिया' x x x x 'यह कवि प्रकाश का कवि है, भारतीय चिन्तनधारा का प्रतिनिधि है, सातत्य और समग्र भाव का कवि है।'

अज्ञेय ने हिन्दी के पाठक के नाम एक खुली चिट्ठी लिखी है जिसमें उनका मन्तव्य है उनका साहित्य 'सुधी, सहृदय प्रमाणित करने के लिए खुला आमंत्रण है और जैसा कि भूमिका में कहा गया है 'विमर्श की संभावनाएं चुकी नही है।, नये क्षितिज खुल सकते है। और खुलेंगे भी।'

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN